आयुर्वेद दिवस 2024

स्रोत: पी.आई.बी

चर्चा में क्यों?

आयुष मंत्रालय ने 29 अक्तूबर, 2024 को 9वाँ आयुर्वेद दिवस मनाया, जिसकी थीम थी "वैश्विक स्वास्थ्य के लिये आयुर्वेद नवाचार।"

- प्रधानमंत्री ने कई स्वास्थ्य परियोजनाओं का उद्घाटन किया, जिसमें **सुलभ आयुर्वेद के प्रति भारत की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला गया।**

आयुर्वेद क्या है?

- **परिचय:** आयुर्वेद समग्र कल्याण को बढ़ावा देने के लिये शरीर, मन और आत्मा में संतुलन प्राप्त करने पर केंद्रित है।
  - आयुर्वेद शब्द **दो संस्कृत शब्दों** से लिया गया है: **"आयु", जिसका अर्थ है जीवन और "वेद", जिसका अर्थ है ज्ञान।**
- **ऐतिहासिक संदर्भ: आयुर्वेद की उत्पत्ति वेदों (5000-1000 ईसा पूर्व) से हुई है और यह सबसे पुरानी स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में से एक है।**
  - रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में पौधों पर आधारित उपचार तथा शल्य चिकित्सा का उल्लेख मिलता है।
    - 1000 ईसा पूर्व के आस-पास चरक और सुश्रुत संहिता ने आयुर्वेद के सिद्धांतों की स्थापना की, बाद में वाग्भट्ट के अष्टांग संग्रह तथा अष्टांग हृदय (आयुर्वेदिक ग्रंथ) द्वारा इसका विस्तार किया गया।
  - 19वीं-20वीं शताब्दी तक **भारत ने आयुर्वेद शिक्षा को औपचारिक रूप दे दिया था,** जिससे संरचित कार्यक्रम और एक समृद्ध उद्योग का निर्माण हुआ जो सार्वजनिक तथा निजी स्वास्थ्य सेवा को समर्थन देता था।
- **आयुर्वेद दिवस:** भारत सरकार वर्ष 2016 से आयुर्वेदिक सिद्धांतों, औषधीय जड़ी-बूटियों और जीवनशैली प्रथाओं के विषय में जागरूकता बढ़ाने के लिये प्रत्येक वर्ष **धन्वंतरि जयंती (धनतेरस) को आयुर्वेद दिवस** मनाती आ रही है।
  - आयुर्वेद का प्रवर्तन **महानतम चिकित्सक धन्वंतरि ने किया**, जिन्हें यह ज्ञान भगवान ब्रह्मा से प्राप्त हुआ था।
- **अंतर्राष्ट्रीय पहुँच:** व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से आयुर्वेद विश्व स्तर पर फैल गया, जिससे तिब्बत, चीन तथा अन्य स्थानों पर पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ प्रभावित हुईं।
  - आयुर्वेद को अब **24 देशों में पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है** तथा 100 से अधिक देश आयुर्वेदिक उत्पादों का आयात करते हैं।
  - इस अंतर्राष्ट्रीय मान्यता को शंघाई सहयोग संगठन (SCO) विशेषज्ञ कार्य समूह, बिम्सटेक टास्कफोर्स और पारंपरिक चिकित्सा पर ब्रिक्स उच्च स्तरीय फोरम जैसे सहयोगी प्लेटफार्मों द्वारा आगे बढ़ाया गया है, जो नीति संरेखण तथा वैश्विक स्वास्थ्य सेवा एकीकरण को बढ़ावा देते हैं।
  - विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने **आयुर्वेद को ICD-11 TM मॉड्यूल 2** में शामिल किया, जिससे आयुर्वेदिक स्वास्थ्य हस्तक्षेपों का सटीक दस्तावेज़ीकरण संभव हो सका।
    - विश्व स्वास्थ्य संगठन ने **आयुर्वेद अभ्यास और प्रशिक्षण के लिये भी मानक निर्धारित किये,** जिससे वैश्विक गुणवत्ता मानकों में वृद्धि हुई।

थीम का महत्त्व क्या है?

इस थीम का उद्देश्य वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दों के समाधान के लिये आयुर्वेदिक नवाचार को बढ़ावा देना है।

- **प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं:**
  - गैर-संक्रामक रोगों (NCD) और रोगाणुरोधी प्रतिरोध का मुकाबला करना।
  - जलवायु परिवर्तन, वृद्धावस्था एवं मानसिक स्वास्थ्य तथा पोषण संबंधी विकारों से संबंधित चुनौतियों का समाधान करना।
  - निवारक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण पर ज़ोर देना।
  - संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) **और** सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (UHC) दृष्टिकोण का समर्थन करना।
- **प्रमुख फोकस क्षेत्र:**
  - **महिला स्वास्थ्य:** महिलाओं से संबंधित स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान के लिये आयुर्वेद की समग्र पद्धतियों का उपयोग करना।

  - **कार्यस्थल कल्याण:** कार्यस्थल पर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिये आयुर्वेदिक सिद्धांतों को लागू करना।
  - **स्कूल कल्याण कार्यक्रम:** बच्चों में आयुर्वेदिक कल्याण को प्रोत्साहित करना, जिसमें प्रतिरक्षा-बढ़ाने और व्यक्तिगत पोषण संबंधी मार्गदर्शन शामिल है।
  - **खाद्य नवप्रवर्तन:** आयुर्वेदिक आहार सिद्धांतों और खाद्य नवप्रवर्तनों की खोज, पारंपरिक एवं आधुनिक पाक तकनीकों का सम्मिश्रण।
- निवारक स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देकर आयुर्वेद **सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) 3** तथा **सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (UHC)** का समर्थन करता है।

आयुर्वेद के विकास के लिये उठाए गए कदम

- राष्ट्रीय आयुष मिशन
- आयुष क्षेत्र पर नए पोर्टल
- ACCR पोर्टल और आयुष संजीवनी ऐप

//

आयुष चिकित्सा पद्धति

आयुष में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं, आयुर्वेद का 5000+ वर्षों का प्रलेखित इतिहास है।

आयुर्वेद

भगवान ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है

- **संहिता काल (1000 ईसा पूर्व):** परिपक्व चिकित्सा प्रणाली के रूप में उभरा
  - **चरक संहिता:** सबसे प्राचीन और आधिकारिक संहिता
  - **सुश्रुत संहिता:** आठ विशिष्टताओं में मौलिक सिद्धांत और चिकित्सीय विधियाँ प्रदान करती है
- **मुख्य शाखा:**
  - **आत्रेय पुनर्वसु-** चिकित्सकों की शाखा
  - **दिवोदास धन्वंतरि -** शल्यचिकित्सकों की शाखा

आयुर्वेद की शाखाएँ

- काय चिकित्सा- चिकित्सा।
- शल्य चिकित्सा- सर्जरी।
- शालाक्य तंत्र- ईएनटी और नेत्र विज्ञान।
- बाल रोग चिकित्सा।

- अगद तंत्र- विष विज्ञान।
- भूतविद्या - मनोरोग।
- रसायन- कायाकल्प चिकित्सा और जराचिकित्सा।
- वाजीकरण तंत्र- सेक्सोलॉजी।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

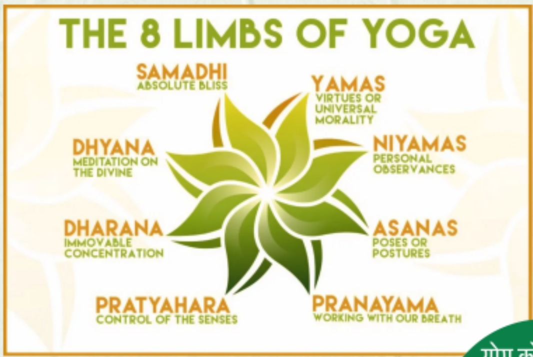

योग को सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया

- **प्राकृतिक चिकित्सा:** 5 प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की सहायता से उपचार
  - शरीर की स्व-उपचार क्षमता सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों पर आधारित
  - रोग-केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है

यूनानी

ग्रीस में अग्रणी, अरबों द्वारा 7 सिद्धांतों के रूप में विकसित (उमूर-ए-तब्बिया)

- बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जालीनूस (गैलेन) की शिक्षाओं के ढाँचे के आधार पर
  - चार ह्युमर्स का हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित्त और काला पित्त
- WHO द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत द्वारा वैकल्पिक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में आधिकारिक दर्जा प्रदान किया गया

सिद्ध

10000 - 4000 ईसा पूर्व; सिद्धर अगस्तियार- सिद्ध चिकित्सा के जनक

- निवारक, प्रोत्साहनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्जीवनात्मक और पुनर्वासात्मक स्वास्थ्य देखभाल
- **4 घटक:** लैट्रो-रसायन विज्ञान, चिकित्सा अभ्यास, योग अभ्यास और बुद्धि
- 3 निदानात्मक ह्युमर्स (मुक्कुट्रम) और 8 महत्त्वपूर्ण परीक्षणों (एन्वागई थेरवु) पर आधारित है

आयुर्वेद के 3 गुण (त्रिदोष): वात, पित्त और कफ

सोवा रिग्पा

उत्पत्ति: भगवान बुद्ध के समय 2500 वर्ष पूर्व भारत में

- लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश आदि के हिमालयी क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा।
- भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (वर्ष 2010 में संशोधित) द्वारा भारत में मान्यता प्राप्त।

होम्योपैथी

जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया

- जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया।
- औषधियाँ मुख्यतः प्राकृतिक पदार्थों (पौधे उत्पाद, खनिज, पशु स्रोत) से तैयार की जाती हैं।
- वर्ष 1810 में यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया; वर्ष 1948 में आधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- **3 प्रमुख सिद्धांत:**
  - सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटूर ("सम: समम् शमयति" या "समरूपता")
  - सिंगल मेडिसिन
  - मिनिमम डोज़

दृष्टि The Vision
Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ayurveda-day-2024